### कक्षा - 11 & 12

# हिन्दी (सामान्य \$ साहित्यिक)

### साहित्येतिहास लेखन की परम्परा

- सर्वप्रथम सुव्यवस्थित हिन्दी साहित्य का इतिहास रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा। उनसे पूर्व लिखे गए साहित्येतिहास ग्रन्य निम्नलिखित हैं-
  - 1. इस्त्वार द ला लितरेत्युर एन्दुई ऐन्दुस्तानी ( फ्रेंच भाषा में ) गार्सा द तासी
  - 2. शिवसिंह सरोज----- शिवसिंह सेंगर
  - 3. द मॉर्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नॉर्दन हिन्दुस्तान ( अंग्रेजी में ) जॉर्ज ग्रियर्सन
  - 4. मिश्रबन्धु विनोद -----मिश्रबन्धु (शुकदेव बिहारी मिश्र , श्याम बिहारी मिश्र , कृष्ण बिहारी मिश्र)
    - → आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद के इतिहास ग्रन्थ
  - हिन्दी भाषा और साहित्य -----श्यामसुन्दर दास
  - 2. उसके साहित्य का इतिहास -----अयोध्यासिंह उपाध्याय ' हरिऔध '
  - हिन्दी साहित्य का इतिहास----- रमाशंकर शुक्ल ' रसाल
  - 4. हिन्दी साहित्य का आलो<mark>चनात्मक इतिहास ------रामकुमार वर्मा</mark>
  - 5. हिन्दी साहित्य -----<mark> हजारी प्रसाद द्विवेदी</mark>
  - 6. आधुनिक हिन्दी साहित्य ----- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
  - 7. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानि<mark>क इतिहास ------ गणपति चन्द गुप्त</mark>
  - 8. हिन्दी साहित्य का अद्यतन इति<mark>हास ----- ( संपा ) नगेन्द्र</mark>
  - 9. हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास ----- बच्चन सिंह
    - → वर्तमान में भी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा जारी है -

### काल विभाजन

→ विभिन्न इतिहासकारों द्वारा हिन्दी साहित्य का किया गया काल विभाजन इस प्रकार है –

मुवित्तः

#### ग्रियर्सन का काल विभाजन

- 1. चारण काल ( 700 से 1300 ई . )
- 2. पन्द्रहवीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण
- 3. जायसी की प्रेम कविता
- 4. ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय ( 1500 से 1600 ई )
- 5. मुगल दखार
- 6. तुलसीदास
- 7. रीतिकाव्य ( 1500 से 1692 ई . )
- 8. तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि ( 1600 से 1700 ई . )

- 9. अठारहवीं शताब्दी
- 10. कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान
- 11. महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान
- 12. विविध

#### मिश्र बन्धु का काल विभाजन –

आदि प्रकरण पूर्व आरम्भिक काल ( 700-1343 वि.सं. )
 उत्तर आरम्भिक काल ( 1844-1444 वि . सं . )

माध्यमिक काल पूर्व माध्यमिक काल ( 1445-1560 वि . सं . )
 प्रौढ़ माध्यमिक काल ( 1561-1680 वि . सं . )

अलंकृत काल
 पूर्व अलंकृत काल ( 1681-1790 वि . सं . )
 उत्तर अलंकृत काल ( 1791-1889 वि . सं . )

- 4. अज्ञात काल 1890-1944 वि.सं.
- नूतन काल
   पूर्व नूतन काल ( 1945-1960 वि . सं . )
   उत्तर नूतन काल ( 1961-1975 वि.सं. )
- 6. वर्तमान काल आचार्य रामचन्द्र शुक्र का काल विभाजन
- 1. वीरगाथा काल (आदिकाल) सं 1050 से 1375 तक
- 2. भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल) सं 1875 से 1700 तक
- 3. रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल) सं १७०० से १९०० तक
- 4. गद्यकाल (आधुनिककाल)- सं 1900से 1984 तक डॉ. रामकुमार वर्मा का काल विभाजन

ाम मनुष्यस्य ततीय नेत्रम्

- 1. सन्धिकाल सं . 750-1000
- चारणकाल सं . 1000-1375
- 3. भक्तिकाल सं . 1375<mark>-1700</mark>
- 4. रीतिकाल ' सं . 1700-1900
- आधुनिक काल सं . 1900 से आगे
   आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का काल विभाजन
- 1. आदिकाल सं . 1000-1350
- 2. भक्तिकाल सं . 1350-1700
- 3. रीतिकाल सं . 1700-1900
- आधुनिक काल सं . 1900 से आगे सर्वप्रचलित काल विभाजन - (Most Imp. 2022)
- 1. आदिकाल 700-1450 ई
- 2. पूर्वमध्यकाल ( भक्ति काल ) 1450-1750 ई

- 3. उत्तर मध्यकाल ( रीतिकाल ) 1750-1850 ई
- 4. आधुनिक काल 1850 से आगे-
- 5. छायावाद युग 1919- 1938 ई
- 6. प्रगतिवाद युग 1938 1943 ई
- 7. प्रयोगवाद युग 1943 1951 ई
- 8. नकेनवाद (प्रपद्यवाद) युग
- 9. नयी कविता युग 1951 1559 ई
- 10. अकविता युग
- 11. साठोत्तरी कविता 1960 ई के बाद

# आदिकाल

मुवित्तः

समय - संवत् 1050 से 1375 तक

आदिकाल का नामकरण – (Most Imp. 2022)

नाम प्रयोक्ता

चारणकाल जार्ज ग्रियर्सन

प्रारम्भिक काल मिश्र बंधु

बीजवपनकाल महावीर प्रसाद द्विवेदी

वीरगाथाकाल आ० रामचंद्र शुक्र

वीरकाल विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

संधिकाल एवं चारण काल डॉ ० रामकुमार वर्मा

सिद्धसामंत काल राहुल सांस्कृत्यायन

आदिकाल हजारीप्रसाद द्विवेदी

जयकाल स्माशंकर शुक्र रसाल

संक्रांतिकाल रामप्रसाद मिश्र

आधारकाल सुमन राजे

रासी काव्य , सिद्ध साहित्य , जैन साहित्य , नाथ साहित्य प्रमुख कवि और काव्य रचनाएं प्रमुख साहित्य

### आदिकाल - रासी काव्य

#### अपभ्रंश साहित्य के कवि-

- · अपभ्रंश भाषा के प्रथम कवि स्वयंभू हैं- डॉ रामकुमार वर्मा के अनुसार
- स्वयंभू की रचनाएं पउमचरिउ, रिट्ठणीमेचरिउ, स्वयंभूछंद
- अपभ्रंश का बाल्मीकि अथवा व्यास स्वयंभू की कहा जाता है।
- पुष्पदंत की रचनाएं -जसहरचरिउ, णयकुमार चरिउ।
- हिंदी का भवभूति पुष्यदन्त
- भाखा की जड़- शिव सिंह सेंगर ने पुष्यदन्त को कहा है।
- अभिमानमेरू, कविकुल तिलक, काव्य रत्नाकर उपाधियां पुष्पदंत की हैं।
- धनपाल भविसयक्तकहा (भविष्यतकथा)

#### रासी साहित्य –

- उपदेश रसायन रास जिन्नदत्त सूरी
- · भारतेश्वर बाहुबली रास- शालिभद्<mark>ध सूरी</mark>
- संदेशरासक अब्दुल रहमान
- पाहुड़दीहा राम सिंह
- परमात्म प्रकाश, योग सागर -जोइन्दू
- परमाल रासी (आल्हाखंड) जगनिक
- खुमान रासो दलपति विजय
- पृथ्वीराज रासी चंदबरदाई (हिंदी का प्रथम महाकाव्य)
- · बीसलदेव रासी नरपति नाल्ह प्रथम बारहमासा वर्णन के प्रवर्तक ।
- · विजयपाल रासी न्रत्न सिंह
- हम्मीर रासी- शारंगधर
- चंदायन /नुकर चंदा की प्रेम कथा / लीरकहा /लीरिक चंदा की प्रेम कथा- मल्ला दाऊद
- जयमयंक जस चंद्रिका- मधुकर कवि
- जयचंद्रप्रकाश भट्ट केदार
- रणमत्न छंद- श्रीधर

#### सिद्ध साहित्य

- दोहाकोष सरहपा
- चर्यापद् शबरपा
- योगचर्या डोम्भिपा

#### जैन साहित्य

- 🌣 श्रावकाचार देवसेन
- भरतेश्वर बाहुबली रास शालिभद्र सूरि
- चन्दन बाला रास -आसगु कवि
- स्थूलिभद्र रास जिनधर्म सूरि
- रेवंतिगरि रास विजयसेन सूरि
- नेमिनाथ रास सुमित गणि

#### नाथ साहित्य

💠 गीरखनाथ- प्राणसंकली , आत्मबोध , महीन्द्र गीरखबोध

#### अन्य कवि - काव्य रचनाएं

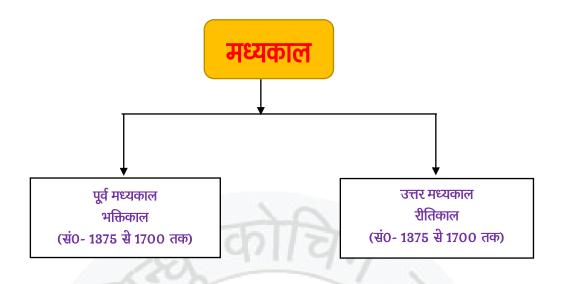
- जयचन्द्र प्रकाश केदार भट्ट
- जयमयंक जस चिन्द्रिका- मधुकर किव
- स्वयंभू पउमचरिउ
- महापुराण पुष्पदन्त
- ❖ भविष्यत कहा धनपाल
- संदेस रासक अब्दुर्रहमान
- शब्दानुशासन- हेमचन्द
- पाहुड़ दोहा रामसिंह
- उक्ति व्यक्ति प्रकरण- दामोदर शर्मा
- 🌣 खुसरो की पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, गजल अमीर खुसरो
- राउलवेल- रोडा
- वर्णरत्नाकर- ज्योतिरीश्वर ठाकुर
- नल दमयंती कथा व्यास कवि
   आदिकाल की प्रवृत्तियाँ
  - I. रासी ( चरित काव्य या कथा काव्य ) काव्य की परम्परा

झानात्

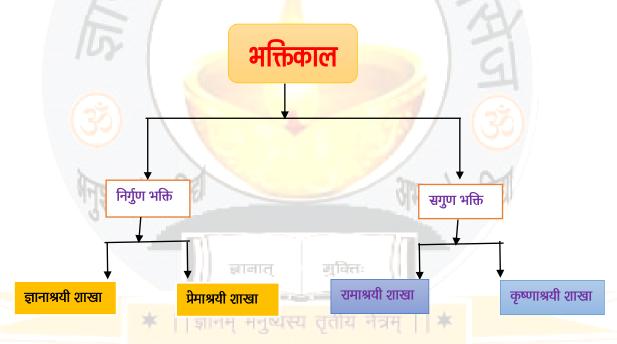
ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम्

मुवित्तः

- II. सिद्ध , जैन , नाथ सम्प्रदाय द्वारा धार्मिक काव्य रचना
- III. वीर तथा शृंगार रस की प्रधानता
- IV. कल्पना का प्राचुर्य
- v. राष्ट्रीय भावना का अभाव
- VI. रचनाओं की संदिग्धता
- VII. अपभ्रंश प्रभावित हिन्दी भाषा
- VIII. डिंगल पिंगल काव्य शैलियों का प्रयोग
  - IX. प्रबन्ध काव्य व मुक्तक काव्य की रचना
  - X. लोक साहित्य की रचना



### पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) (सं0- 1375 से 1700 तक)



- भक्ति शब्द की उत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई मीनियर विलियम्स।
- > भक्ति शब्द का प्रथम प्रयोग श्वेताश्वेतर उपनिषद् में मिलता है।
- > भक्तिकाल को हिंदी का स्वर्णयुग जार्ज ग्रियर्सन ने कहा है।
- > भक्तिकाल को लोकजागरण काल के नाम से डॉ. रामविलास शर्मा ने पुकारा है।

### <u> निर्गुण भक्ति</u> - निर्गुण भक्ति के प्रवर्तक कबीरदास जी हैं।

- ज्ञानाश्रयी शाखा इस शाखा के कवियों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की तथा ज्ञान के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति के मार्ग को खोजा, अतः यह शाखा ज्ञानाश्रयी शाखा कहलायी।
- 💠 प्रमुख कवि -

Trick- क. दा. युं. म. रै. ना.

- कबीर बीजक (संकलनकर्ता कबीर के शिष्य धर्मदास
   (साखी , सबद , रमैनी संकलित हैं।)
- दादूदयाल
- सुन्दरदास
- मलूकदास
- रैदास इनकी शिष्या मीराबाई जी थी।
- नानक
- प्रमुख प्रवृत्तियाँ / विशेषताएँ -
  - निर्गुण ब्रह्म की उपासना
  - एकेश्वरवाद का समर्थन
  - 🕨 नाम स्मरण का महत्त्व
  - 🕨 गुरू का महत्व
  - जाति-पांति का विरोध
- प्रेमाश्रयी शाखा- लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है, इसी कारण इसे प्रेमाख्यानक काव्य सूफी काव्य आदि नामो से जाना जाता है।
- प्रमुख कवि -

Trick- जा. कुतु. मंझन. उस्. मुल्ला. के.

मालिक मुहम्मद जायसी —
 <u>खनाएं -</u>

# \* पद्मावत - में नागमती, पद्मावती और रत्नसेन की प्रेम कहानी है।

### \star पद्मावत में प्रतीक

राजा – मन (आत्मा) का प्रतीक सिंहल – हृदय पद्मावती – बुद्धि सुआ/ हीरामन तोता – गुरु नागमती – दुनिया धंधा राघव चेतन – शैतान अलाउद्दीन – माया

- \* अखरावट- वर्णमाला के एक-एक अक्षर से सिद्धांत निरूपण।
- \* आखिरी कलाम क़यामत का वर्णन।
- \* चित्ररेखा लघु प्रेमाख्यानक
- \* कहरानामा अध्यात्मिक विवाह वर्णन है ,कहरवा शैली।
- \* मसलानामा ईश्वर भक्ति के प्रति प्रेमनिवेदन।
- कन्हावत ।
- कुतुबन मृगावती गाँवताः
- मंझन मधुमालती
- उस्मान चित्रावली
- मुल्ला दाऊद चंदायन

अन्य कवि एवं महत्वपूर्ण रचनाएं -

कवि रचना

- 🔗 असाईत हंसावली
- 🖈 ईश्वरदास सत्यवती कथा
- 🖈 नन्ददास रूपमंजरी
- 🖈 नारायणदास छितईवार्त्ता
- 🖈 पुहकर रसरतन
- 🖈 शेख नबी ज्ञानदीप

- 🖈 कासिमशाह हंस जवाहिर
- 🔗 नूरमुहम्मद इन्द्रावती, अनुराग बांसुरी।
- प्रमुख प्रवृत्तियाँ / विशेषताएँ -
  - > नारी के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन
  - प्रेम तत्व की प्रधानता
  - > प्रकृति का नाना रूपीं में चित्रण
  - > प्राचीन अवधी का प्रयोग
  - 🕨 सूफी दर्शन का प्रभाव
  - 🕨 गुरू की महत्ता का प्रतिपादन

### सगुण भक्ति -

- ❖ रामाश्रयी शाखा- जिन कवियों ने राम के सगुन रूप की उपासना की वे रामभक्त कवि कहलाए, हिंदी मैं रामकाव्य के प्रवर्तक रामानंद माने जाते हैं। राम भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास जी माने जाते हैं।
- 💠 प्रमुख कवि -

रामानंद – के गुरु – राघवानन्द रामानंद के 12 शिष्य थे

- 1) सुखानंद
- 2)अनंतानंद
- 3) सुरसुरानन्द
- 4) नर्हर्यानन्द शिष्य तुलसीदास
- 5)भावानन्द
- 6)पीपा
- **7**) सेन
- 8)कबीर
- 9)धन्ना

- 10) रैदास
- 11) पद्मावती (स्त्री)
- 12) सुरसरी (स्त्री)

Trick- सुख अनंत सुर नरहरि भावा| पी से कबीर धरै प सु<u>गावा|</u>|

# <mark>तुलसीदास</mark>

जन्म - 1532	मृत्यु - 1623 ई०
पिता – आत्माराम दुबे	माता -हुलसी
दीक्षा गुरु – नरहर्यानंद	शिक्षा गुरू – शेष सनातन
पती - रतावली	(35)

- तुलसीदास को नाभादास ने कलिकाल का वाल्मीकि कहा है।
- तुलसीदास को मुग़ल काल का सबसे महान व्यक्ति स्मिथ ने कहा है।
- तुलसीदास को बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक जार्ज ग्रियर्सन ने कहा है।
- तुलसीदास को हिंदी का जातीय कवि <u>रामविलास शर्म</u>ा ने कहा है।
- तुलसीदास को मानस का हंस <u>अमृतलाल नागर</u> ने कहा है|
- 🕨 तुलसीदास की प्रथम रचना ' वैराग्य संदीपनी ' तथा अन्तिम रचना ' कवितावली

को माना जाता है। अधिकांश विद्वान ' रामलला नहछू ' को प्रथम कृति मानते हैं।

तुलसीदास की 12 प्रमाणिक रचनाएँ मानी गयीं हैं।
 ट्रिक – कृ. गी. रा. दो. वि. रा. पा. जा. वै. ब. रा. क.

- 1. कृष्ण गीतावली ब्रजभाषा ' कृष्ण गीतावली ' में गोस्वामीजी ने कृष्ण से सम्बन्धी पदों की रचना की तथा
- 2. गीतावली ब्रजभाषा
- 3. रामलला नहछू --- ठेठ अवधी- विवाह गीत संकलित है।
- 4. दोहावली ब्रजभाषा
- 5. विनयपत्रिका ब्रजभाषा
- 6. रामचरितमानस अवधी -- रामचरितमानस ' की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्र रामनवमी ( मंगलवार ) की हुआ । इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा ।

7- कांड क्रमशः है- TRICK-----BAAKSLU
वालकाण्ड ➡ अयोध्याकाण्ड ➡ अरण्य कांड ➡
किष्किन्धाकाण्ड ➡ सुन्दरकाण्ड ➡
लंकाकाण्ड ➡ उत्तरकाण्ड

- अाचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ' रामचरितमानस ' को ' लोकमंगल की साधनावस्था ' का काव्य माना है ।
- \* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||\*
- 7. पार्वती मंगल अवधी- 'पार्वती मंगल ' में पार्वती और शिव के विवाह का वर्णन किया।
- 8. जानकी मंगल -- अवधी सीता व राम का विवाह वर्णित है।
- 9. वैराग्य संदीपनी ब्रजभाषा- संतो महात्माओं के लक्षण बताये गए है।
- **10.बरवे रामायण अवधी-** बरवे छंद में रामायण लिखी है।

- 11.रामाज्ञा प्रश्न अवधी--' रामाज्ञा प्रश्न ' एक ज्योतिष ग्रन्थ है ।
- **12.कवितावली ब्रजभाषा --** कवितावली ' में बनारस ( काशी )
  - के तत्कालीन समय में फैले ' महामारी ' का वर्णन ' उत्तरकाण्ड
  - ' में किया गया है। 'कवितावली ' के परिशिष्ट में '
  - हनुमानबाहुक ' भी संलग्न है । अपने बाहु रोग से मुक्ति के लिए '
  - हनुमानबाहुक ' की रचना की।

### <u>केशवदास</u>

- क किन काव्य का प्रेत कहा जाता है ।
- ★केशव को उडगन भी कहा जाता है।
- ★रामचंद्रिका को छंदों का अजायबघर कहा जाता है |
- \*छंदों का बादशाह कहा जाता है | कृतियाँ –

### <u>Trick- र. क. रा. ज. र. वी. वि.</u>

- रसिकप्रिया
- कविप्रिया
- रामचंद्रिकाग्राचनः
- जहाँगीर जस चंद्रिका
- रतनबावनी
- वीरसिंह देव चरित
- विज्ञानगीता

# <u>अन्य प्रसिद्ध कवि एवं उनकी कृतियां</u>

ि सेनापति – कवित्त रत्नाकर,काव्य कल्पद्रुम ते नाभादास – अष्टयाम,भक्तमाल | ते प्राणचंद चौहान - रामायण महानाटक ते हृदयराम – हनुमन्नाटक

### प्रमुख प्रवृत्तियाँ / विशेषताएँ -

- > राम का लोकनायक रूप में चित्रण
- > दास्य भाव की भक्ति
- > लोकमंगल की भावना
- ≽ अवधी और ब्रज भाषा का प्रमुख रूप प्रयोग।
- प्रबंध तथा मुक्तक काव्य शैली।

❖ कृष्णाश्रयी शाखा- जिन कवियों ने कृष्ण के सगुन रूप की उपासना की वे कृष्णभक्त कवि कहलाए।

मुवित्तः

- 🕨 कृष्णभक्त कवियों का आधार ग्रन्थ 'भागवत महापुराण' है |
- कृष्णकाव्य के प्रमुख सम्प्रदाय एवं उनके प्रवर्तक निम्नलिखित
   हैं –

संप्रदाय	प्रवर्तक
सनकादि सं०	निम्बार्काचार्य
रूद्र सं०	बल्लभाचार्य

सखी सं०	स्वामी हरिदास
गौडीय सं०	चैतन्य महाप्रभु
राधावल्लभ सं०	हितहरिवंश

### मुख्य वाद एवं प्रवर्तक -

वाद	प्रवर्तक
द्वैतवाद	माधवाचार्य
अद्वैतवाद	शंकराचार्य
द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	बल्लभाचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
	9

प्रमुख कवि -



मुचित्तः

# सूरदास्यस्य तृतीय नेत्रम् ।

- हिंदी में भ्रमरगीत काव्य परम्परा के प्रवर्तक सूरदास जी हैं |
- सूर की भक्ति सख्य भाव की थी।

गुरु – बल्लभाचार्य

रचनाएँ -

सूर वात्सल्य सम्राट कहे जाते हैं।

- सूरसागर इसका उपजीव्य ग्रन्थ भागवत
   महापुराण का दशम स्कंध है ।
- सूरसारावली इसकी रचना संसार को होली
   मानकर की गयी है।
- साहित्यलहरी- इसमें 118 दृष्टिकूट पद संकलित
   है।
- सूर की मुख्य भाषा ब्रज है।

### **‡**मीराबाई -

- इनकी भक्ति माधुर्य भाव की थी |
- रचनाएँ -
  - **\*गीतगोबिंद का** टीका
  - **\* रागागीबिंद**
  - **\* नरसी जी का** मायरा
  - **<b>** ≉राग सोरठ
  - **\* रुक्मिणी मंगल**

<sub>बाना</sub> अष्टछाप के कवि

🛪 अष्टछाप की स्थापना १५६५ ई. में

विट्ठलनाथ ने की।

ट्रिक — सू. कु. प. कृ. छी. गो. च. न.

सूरदास कुम्भनदास परमानंद दास कृष्णदास



